प्रयोग विधि :

- 100 ली पानी में 2–2.5 ली मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

अग्निअस्त्र

पेड़ के तनों या डंठलों में रहने वाले कीड़े, फलियों में रहने वाली सुड़ियों तथा सभी प्रकार की बड़ी सुडियों व झल्लियों के लिए

सामग्री :

बनाने की विधि :

हरी मिर्च, लहसून एवं नीम की पत्ती को कूटकर बड़े बर्तन में गोमूत्र के साथ मिला लें और लकड़ी के डंडे से घोलें और उबालें। 4–5 उबाल आने पर उतार लें फिर 48 घंटे बाद कपड़े से छानकर रख लें।

प्रयोग विधि :

100 ली पानी में 2 –2.5 ली डालकर फसल पर छिड़काव करें।

दशपर्णी अर्क

सभी प्रकार के रसचूसक कीट एवं सभी झल्लियों के नियंत्रण के लिए।

समाग्रीः

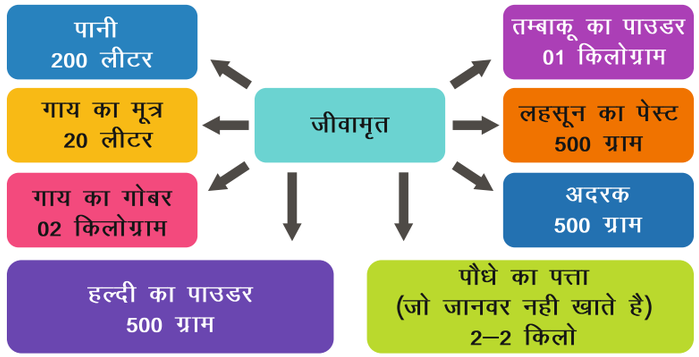

दिन में दो बार घुमाना है एवं 40 दिन के लिए रख देना है। 5 लीटर दशपर्णी अर्क 200 लीटर पानी में मिला कर व्यवहार करते हैं। इसका व्यवहार 6 महीने तक किया जा सकता है।

लागत कम लगती है : प्राकृतिक खेती तकनीक के जरिए जो किसान खेती करते हैं उन्हें किसी भी प्रकार के रासायनिक खाद एवं रासायनिक कीटनाशक को खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती है। इस तकनीक में किसान केवल स्थानीय संस्थानों पर आधारित तरल जैविक खादों का इस्तेमाल रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों की जगह करते हैं, जिससे खेती की लागत में काफी कमी हो जाती है। प्राकृतिक खेती तकनीक में स्थानीय बीजों और देशी किस्मों की सब्जियों, अनाज, दालों और अन्य फसलों का उपयोग करने के लिए प्रात्साहित करते हैं।

जमीन के लिए फायदेमंद : जब किसानों द्वारा रासायनिक और कीटनाशकों का छिड़काव फसलों पर किया जाता है तो इनके कारण जमीन के उपजाऊपन को नुकसान पहुंचता है और कुछ समय बाद जमीन पर फसलों की पैदावार अच्छे से नहीं हो पाती है। मगर प्राकृतिक खेती तकनीक किसानों द्वारा खेती के दौरान किया जाए तो इसकी मदद से जमीन का उपजाऊपन बना रहता है और फसलों की पैदावार भी अच्छी होती है।

मुनाफा ज्यादा होता है : प्राकृतिक खेती के तहत केवल स्वयं से बनाई प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित कई प्रकार के खाद का इस्तेमाल किया जाता है और ऐसा होने से किसानों को किसी भी फसल को उगाने में कम खर्च आता है और कम लागत लगने के कारण उस फसल पर किसानों को अधिक मुनाफा होता है।

प्राकृतिक खेती का अगर सीधा–सीधा अर्थ लगाएं तो जीवों के लिए जीवाणुओं द्वारा प्राकृतिक घटकों की सहायता से की जाने वाली जीवनदायिनी कृषि को ही प्राकृतिक खेती कहते हैं।

प्रकाशक :

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़ (पटना)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, भागलपुर, बिहार

भाकृअनुप
ICAR

प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती

डॉ॰ रीता सिंह, श्री राजीव कुमार
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, विषय वस्तु विशेषज्ञ, (मृदा विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़, पटना

यह एक ऐसी प्रणाली है जहाँ प्रकृति के नियम कृषि पद्धतियों पर लागू होते हैं। यह विधि प्रत्येक कृषि क्षेत्र की प्राकृतिक जैव विविधता के साथ काम करती जो खाद्य पौधों के जीवों, पौधों और जानवरों की जटिलता को एकीकृत करती है। यह खाद्य पौधों के साथ–साथ प्रत्येक विशेष पारिस्थितिकी तंत्र को विकसित करने के लिए आकार देती है। यह देशी गाय आधारित कृषि पद्धति है जिसमें एक देशी गाय से लगभग 30 एकड़ की खेती की जा सकती है।

प्राकृतिक खेती के मुख्य घटक

1. बीजामृत 2. जीवामृत, 3. अच्छादन 4. वाफसा

बीजामृत

किसी भी फसल के बीजों को बोने से पहले, बीजों को बीजामृत से उपचारित करके बुआई करनी चाहिए। बीजों को बीजामृत से उपचारित करके कुछ देर सूखने के लिए छोड़ दें। बीजों पर लगे बीजामृत सूखने के बाद बीजों की बुआई के लिए उपयुक्त होता है।

सामग्रीः–

- उपरोक्त सभी को एक साथ मिला कर 24 घंटे तक रखना है।
- सुबह शाम दो बार लकड़ी के डंडे से घुमाना है।

जीवामृत

सामग्रीः–

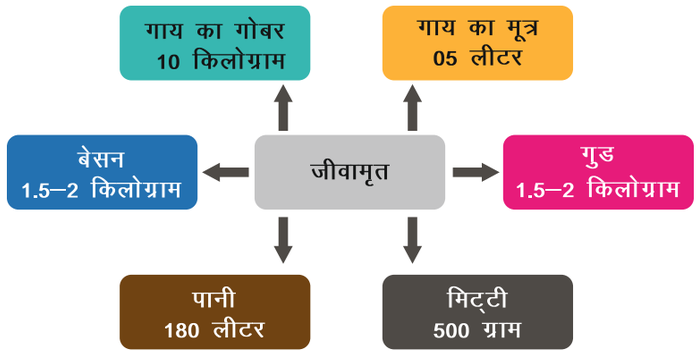

बनाने की विधि :

- उपरोक्त सामग्री को प्लास्टिक ड्रम में डालकर लकड़ी के डंडें से घोलें।
- घोल को जूट की बोरी से ढ़ककर छाया में रख दें।
- प्रतिदिन दो बार सुबह–शाम घड़ी की सूई की दिशा में लकड़ी के डंडे से चलाये।
- गर्मी के मौसम में 7 दिन एवं ठंढ़ के मौसम में 8–15 दिन में जीवामृत उपयोग हेतु तैयार हो जाता है।

प्रयोग विधि :

- जीवामृत को महीने में दो बार या एक बार उपलब्धता के अनुसार 200 ली. प्रति एकड़ की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।
- गन्ना, केला, गेहूँ, ज्वार, मक्का, अरहर, मुंग, उड़द, चना, सूर्यमुखी, सरसों, मिर्च, प्याज, हल्दी, अदरक, बैगन, टमाटर, आलू, लहसुन, हरी सब्जी फुल, औषधीय पौधे पर जीवामृत का छिड़काव करने से काफी लाभ होता है।

खड़ी फसल पर जीवामृत के छिड़काव विधि :

- बुआई के 21 दिन पश्चात् प्रति एकड़ 200 ली पानी और 20 ली जीवामृत को मिलाकर छिड़काव करें।
- पहले छिड़काव के 21 दिन बाद 200 ली पानी और 5 ली खट्टी छाछ मिलाकर छिड़काव करें।

घनजीवामृत

समाग्रीः–

बबनाने की विधि :

- उपरोक्त सभी पदार्थों को अच्छी तरह मिलाकर गूँथ लें तथा उसे 2 दिन तक बोरे से ढ़क्कर रखें और नमी बनाये रखें। उसके बाद उसे लडडू के आकार में बना लें।
- 100 कि.ग्रा. गोबर को बारीक कर उसमें 20 ली जीवामृत मिलाने से भी घनजीवामृत बना सकते हैं।

प्रयोग विधि :

- घनजीवामृत के लड्डू पेड़ की जड़ों के पास रखें ताकि जीवामृत जड़ों तक पहुँच सके।
- फसल की बुवाई के समय 100 कि. ग्रा. गोबर को बारीक चूर्ण बनाकर उसमें 20 ली जीवामृत मिलाकर उसे सीधे खेत में प्रयोग किया जा सकता है।

वापसा

यह मिट्टी में सूक्ष्म जलवायु का निर्माण है। भूमि के अंदर मिट्टी के दो कणों के बीच खाली जगह में पानी का अस्तित्व नहीं रहना चाहिए वरण उस खाली जगह में 50 प्रतिशत वाश्प और 50 प्रतिशत हवा का मिश्रण होना चाहिए। इस स्थिति को श्वापसा कहते हैं। मिटटी के दो कणों के बीच पानी रहने के कारन ऑक्सीजन नहीं मिल पाता है जिसके चलते जीवाणु मर जाते हैं एवं फसल पीली पड़ जाती है।

अच्छादन

मिटटी के नमी का संरक्षण करने के लिए और उसकी जैव विविधता को बनाये रखने के लिए मल्चिंग का प्रयोग किया जाता है। मृदा अच्छादन में मिटटी की सतह को ढ़कने के लिए कई तरह के सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा

नीमास्त्र

यह एक प्राकृतिक कीटनाशक है। यह रस चुसने वाले कीट एवं लीफ माइनर के नियंत्रण के लिए प्रभावी कीटनाशी है।

बनाने की विधि :

- 5 किलो नीम की हरी पत्ती/सूखा फल ले फिर पत्तियों या फलों को कूटकर 100 ली पानी में मिलाएँ, उसमें 5 ली गौमूत्र एवं 1 किलो देशी गाय का गोबर मिला लें। लकड़ी के डंडे से उसे घोलें और उसे ढ़ककर 48 घंटे तक रखें।

सामग्री :

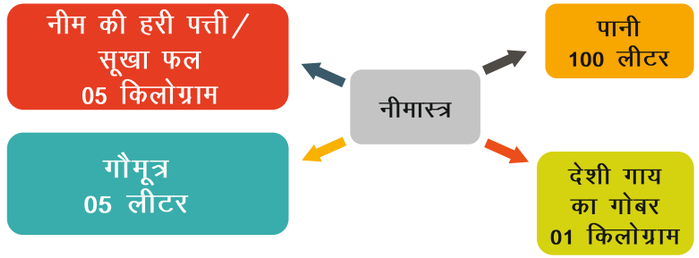

प्रयोग विधि :

- नीमास्त्र को कपड़े से छानकर अपने फसलों पर छिड़काव करें।

ब्रह्मास्त्र : कीड़ों, बड़ी सुन्डियों व झल्लियों के लिए प्रभावी।

बनाने की विधि :

- 10 ली गोमूत्र लें, उसमें 3 किलो नीम के पत्ते पीसकर डालें। उसमें 2 किलो करंज के पत्ते डालें। यदि करंज के पत्ते न मिले तो 3 किलो की जगह 5 किलो नीम की पत्ती डालें, उसमें 2 किलो सीताफल के पत्ते पीसकर डालें। सफेद धतूरे के 2 किलो पत्ती भी पीसकर डालें। अब इस सारे मिश्रण को गोमूत्र में घोलें और ढ़ककर उबालें। 3–4 उबाल आने के बाद उसे 48 घंटों तक ठंढ़ा होने दें फिर उसे कपड़े से छानकर किसी बड़े बर्तन में भरकर रख लें।

ब्रहमास्त्र

सामग्रीः–